(शोध वातायन)

अरुणाचल प्रदेश: लोक-साहित्य और हिंदी अनुसंधान

संतिमो निमासो

अरुणाचल प्रदेश की ख़ूबसूरती जिन अक्षरों से बढ़ जाती है, वह इस प्रदेश की लोक-संपदा हैं। ये अक्षर इस प्रदेश की मातृभाषाओं के लोक-ज्ञान और लोक-संस्कृति का परिचायक हैं। इनके बारे में आज बड़ी संख्या में लेखन और शोध-कार्य हो रहे हैं। अरुणाचल प्रदेश में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी बेहद लोकप्रिय है। साथ ही पिछले कुछ वर्षों में यहाँ के स्थानीय लेखकों ने हिंदी लेखन के माध्यम से अपनी विशेष और सर्वप्रिय पहचान बना ली है। दरअसल, अरुणाचल प्रदेश केवल वन, नदी, ऊँचे पहाड़, भिन्न-भिन्न विशेषता वाले पेड़-पौधे और वनस्पतियों से नहीं भरा-पूरा है, बल्कि यहां की वाचिकता और स्मृति-ज्ञान जनजातीय इतिहास, मिथकों, पुरा-कथाओं, लोक-गीतों आदि का सच्चा कोठार मालूम देता है, जिसके बारे में बहुत कम जानकारी बृहद भारतीय समाज को है, जबकि इस बारे में जानने की उत्कंठा हाल के दिनों में बढ़ी है। इस आलेख में मैंने अरुणाचल प्रदेश के लोक-साहित्य को समझने की दृष्टि से हुए शोध-कार्यों, शोध-परियोजनाओं तथा हिंदी में लिखित और प्रकाशित पुस्तकों, स्वतंत्र आलेखों आदि को प्रकाश में लाने का यथासंभव प्रयास किया है। अरुणाचल प्रदेश को केंद्र में रखते हुए वेरिअर एल्विन का काम सबसे पहले देख सकते हैं। एल्विन की प्रकाशित मुख्य पुस्तकें हैं- 'ए न्यू बुक ऑफ़ ट्राइबल फिक्शन', 'मिथ ऑफ़ दि नार्थ-ईस्ट फ्रंटियर ऑफ़ इंडिया', 'डेमोक्रेसी इन नेफ़ा'। ये तीनों किताबें पूर्वोत्तर के बारे में बताती हैं तथा उत्तर-पूर्व की जनजातीय समाज-संस्कृति को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समझने की दृष्टि देती हैं। एल्विन ने यहाँ के मिथकों और पुरा-कथाओं का आधुनिक संदर्भों में विश्लेषण किया साथ ही इनके महत्त्व को रेखांकित किया है। ये तीनों किताबें पूर्वोत्तर की जीवन-शैली, लोक-परंपरा, दर्शन, इतिहास, लोक-कला, ग्राम सभा इत्यादि पर आधारित हैं, जिनमें स्थानीय लोक-साहित्य के मौखिक साक्ष्यों के आधार पर किया गया गहन अध्ययन और विश्लेषण मौजूद है। अरुणाचल प्रदेश की दृष्टि से वेरिअर एल्विन का काम बेहद महत्त्वपूर्ण है।

डॉ. एन. एन. ओसिक द्वारा लिखित 'मॉडर्न हिस्ट्री ऑफ अरुणाचल प्रदेश (1825-1997)' पुस्तक अरुणाचल प्रदेश की आधुनिक इतिहास पर चर्चा करती है। यह पुस्तक पाठक को अंग्रेज शासन के दौरान अरुणाचल तथा आजादी के बाद निर्मित अरुणाचल से अवगत कराती है। इतना ही नहीं इस पुस्तक के माध्यम से प्रदेश के अनसंग हीरोज़ के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है। आर. सी. सुतिया लिखित 'अरुणाचल प्रदेश : लैंड ऑफ़ दि राइजिंग सन' पुस्तक अरुणोदय की भूमि अरुणाचल प्रदेश के बारे में जानने के लिए पठनीय पुस्तक है। इसी तरह अमरेन्द्र कुमार ठाकुर द्वारा लिखित पुस्तक 'स्लेवरी इन अरुणाचल प्रदेश' कुछ समुदायों में मौजूद दास बनाने की प्रथा की चर्चा करती है। आज 'स्लेवरी' की प्रथा ख़त्म हो चुकी है, लेकिन इस पुस्तक को पढ़ने के बाद 'स्लेवरी' की मर्मांतक कथा प्रकट हो जाती है। एच. जी. जोशी लिखित 'अरुणाचल प्रदेश पास्ट एण्ड प्रेजेंट' नामक पुस्तक यहाँ की सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, कृषि, वन्य-जीवन आदि पर चर्चा करती है। यह प्राचीन काल से आधुनिक समय में हुए परिवर्तनों पर भी प्रकाश डालती है। इस पुस्तक

को पढ़ना बेहद जरूरी है। इस पुस्तक से केवल अरुणाचल के जीवन-शैली ही नहीं, बल्कि यहाँ के इतिहास से भी अवगत हो पाते हैं। एम. एल. बोस द्वारा लिखित पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ अरुणाचल प्रदेश' एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है जो अरुणाचल प्रदेश के इतिहास, समाज एवं संस्कृति ही नहीं बल्कि इस प्रदेश में हुए संवैधानिक और प्रशासनिक विकास के अलग-अलग चरणों की भी जानकारी देती है। इसी क्रम में डॉ. धर्मराज सिंह द्वारा लिखित 'अरुणाचल की जनजातियाँ और ऐतिहासिक स्थान' भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। यह पाठकों को इस प्रदेश के विभिन्न जनजातियों एवं उनके जीवनशैली तथा यहाँ की ऐतिहासिक स्थानों के बारे में वस्तुनिष्ठ ढंग से बताती है।

अरुणाचल प्रदेश को केंद्र में रखकर लिखी गई कई सारी पुस्तकें उपलब्ध हैं और आज भी लिखी जा रही हैं। ध्यातव्य है कि अरुणाचल प्रदेश की विभिन्न जनजातियों में से किसी विशिष्ट जनजाति पर आधारित भी कई सारे पुस्तकें उपलब्ध है। रघुवीर सिन्हा द्वारा लिखित 'दि अकाज' ग्रंथ अरुणाचल प्रदेश के आका जनजाति को केंद्र में रखकर लिखा गया पहला प्रयास है। इसमें लेखक ने आका जनजाति की समाज व्यवस्था, घरेलू जीवन, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संरचनाओं का विवेचन किया है। सिन्हा ने आगे शोध करने वाले अध्येताओं के लिए भूमिका तैयार कर जैसे रख दिया हो। इस दृष्टि से यह ग्रंथ अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसी क्रम में गिबजी निमाचो द्वारा लिखित 'दि आकाज लैंड एण्ड पीपल' ग्रंथ भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। निमाचो जी ने अपनी पुस्तक के द्वारा एक अलग दृष्टि देने का प्रयास किया है। उन्होंने आका समुदाय के संदर्भ में भौगोलिक दृष्टि को केंद्र में रखकर लिखा है। इतना ही नहीं उन्होंने आका समुदाय का वन संसाधनों एवं जीव-जंतुओं से जुड़ाव और उन पर अपनी निर्भरता पर भी प्रकाश डाला है। सचिन रॉय ने 'आस्पेक्टस ऑफ पादाम मीनयोंग कल्चर' नामक पुस्तक से आदी जनजाति के उपजनजाति पादाम मीनयोंग के संस्कृति एवं जीवन-शैली को उजागर करने का प्रयास किया है। इसी प्रकार बिकाश बनर्जी द्वारा लिखित पुस्तक 'दी बोकार्स' भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है, जो आदी जनजाति की उपजनजाति बोकार के संदर्भ में मौलिक जानकारी उपलब्ध कराती है। इसी क्रम में ए. हैमिल्टन की पुस्तक 'इन अबोर जंगल्स ऑफ नॉर्थ-ईस्ट इण्डिया', आदी जनजाति के इतिहास की ओर ले चलती है। इस पुस्तक से लोगों के सामने आदी जनजाति को अबोर कहने के पीछे की कहानी और उसमें छुपे इतिहास का पता चलता है। साथ ही अंग्रेज-आदी संबंध का भी दर्शन होता है। इसी प्रकार आदी समुदाय पर लिखित अनेक ग्रंथ आज उपलब्ध हैं, जैसे- डॉ. ताई न्योरी द्वारा लिखित 'हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ दी आदीज', नासी कोजे लिखित 'स्टडी ऑफ दिसकॉर्स थ्रू आदी फोकटेल्स ऑफ अरुणाचल प्रदेश', डॉ. जोगेन्द्र नाथ लिखित 'ए कल्चरल हिस्ट्री ऑफ दी आदीज ऑफ अरुणाचल प्रदेश' इत्यादि। यह इस प्रदेश के प्रमुख जनजाति आदी के खान-पान, रहन-सहन, उनकी संस्कृति एवं लोक कथाओं के ज्ञान का पिटारा है। ऐसी पुस्तकों का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

इसी क्रम में न्यीशी जनजाति को केंद्र में रखकर भी कई सारे पुस्तकें प्रकाशित हैं- नाबाम नाखा हिना द्वारा लिखित 'कस्टमेरी लौस ऑफ न्यीशी ट्राइब ऑफ अरुणाचल प्रदेश', जो न्यीशी समुदाय के प्रथागत कानूनों और रीति रिवाजों के बारे में बताता है। न्यीशी समाज में ग्राम परिषद 'न्येले' नाम से जाना जाता है। यह प्रथागत कानून नियामों का एक संगठित समूह है जो पीढ़ियों से मान्य है। इस समूह के निर्णय को निरंतर एक समान पालन करने के कारण यह समाज की एक आधिकारिक कानून संबंधित व्यवस्था बन चुकी है। इस ग्रंथ

में लेखक ने प्रथागत कानूनों एवं रीति-रिवाजों का वर्गीकरण का भी जिक्र किया है। ऐसी किताबों से यह ज्ञात होता है कि विभिन्न जनजाति के भी अपने-अपने कानून होते हैं। ताना शोरेन ने 'दि न्यिशी ऑफ अरुणाचल प्रदेश: एन एथनो हिस्टोरीकल स्टडी' लिखा जो न्यीशी जनजाति की जीवन एवं संस्कृतियों से संबंधित जरूरी जानकारी उपलब्ध कराती है।

एच. के. मोरङ एवं दिव्यलता ने 'तंग्साज' (दि चिल्ड्रन ऑफ मसूई सिंगरापुम) नामक ग्रंथ तंग्सा समुदाय से जुड़े समाज, उनके जीवन-शैली, रीति-रिवाजों एवं 'मसूई सिंगरापुम' पहाड़ से संबंधित जानकारियां उपलब्ध कराती है। कहते हैं कि तंग्सा जनजाति के लोग मसूई सिंगरापुम पहाड़ से जन्मे हैं। इस पहाड़ से जुड़ी लोक कथाएँ भी इस समाज में उपलब्ध हैं। इसी क्रम में पारुल दत्ता की 'दि तंग्साज' भी एक बेहद महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इस पुस्तक के माध्यम से पारुल दत्ता ने तंग्सा समुदाय के उद्भव संबंधी इतिहास, विस्थापन, घरेलू जीवन, हेड हंटर्स कहलाने की परंपरा, सामाजिक जीवन, राजनीतिक जीवन, धार्मिक जीवन आदि पर चर्चा करते हुए तंग्सा समाज को अत्यंत सुंदर ढंग से पूरे विश्व के सामने पेश किया है। नारायण सिंह राव ने अरुणाचल प्रदेश के तुतसा जनजाति को केंद्र में रखकर 'दि तुतसा ट्राइब ऑफ नॉर्थ-ईस्ट इंडिया' पुस्तक को प्रकाशित किया। इसमें लेखक ने तुतसा समाज के उद्भव, स्थानांतरण, इतिहास पर चर्चा की है। आगे तरुण कुमार भट्टाचारजी ने 'दि इदुस ऑफ माथून एण्ड ड्री वेली' नामक ग्रंथ की रचना की है। यह पुस्तक अरुणाचल प्रदेश के इदु समुदाय के बारे में है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने दिबांग जिले में स्थित माथून एवं ड्री घाटियों के बीच निवास करने वाले लोगों की जीवन-शैली, खान-पान आदि के बारे में विशेष जानकारी उपलब्ध करायी है। इतना ही नहीं बल्कि यहाँ के पहनावा, आभूषण, वनस्पति जगत एवं प्राणिजगत के विषय में गंभीरतापूर्वक चर्चा की है।

अरुणाचल प्रदेश के लेखकों ने अपने लेखन से हिंदी जगत में अपना नाम कमाया है। उन्होंने अपना नाम ही नहीं बल्कि अपने लेखन से यहाँ के समाज, प्राकृतिक संपदाओं, पशु-पक्षी आदि को हिंदीवासियों से जोड़ने का प्रयास किया है। वर्तमान में रचनाकारों ने हर विधाओं में हस्तक्षेप किया है। उन्होंने कविता, कहानी नाटक के साथ उपन्यास और नाटकों के क्षेत्र में भी कदम बढ़ाया है। इन नामों में जुमसी सिराम, येशे दोरजी थोंग्छी, लुम्मेर दाई, जोराम यालाम नाबाम, जमुना बीनी, ताई तुगुंङ, तारो सिन्दिक, रेमोन लॉनकु, दोरजी लॉनपु आदि आते हैं। जुमसी सिराम ने 'मातमुर जामोह' एवं 'मेरी आवाज सुनो' नामक उपन्यास लिखा है। यह गालो जनजाति पर आधारित एक उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से उन्होंने स्त्रियों को अपनी पहचान, स्वतंत्र अस्तित्व एवं पितृसत्ता के अधिकारियों पर सवाल उठाने के लिए आवाज दी है। 'मातमुर जमोह' उपन्यास एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं को आधार बनाकर ब्रिटिश औपनिवेशिक दौर में एक अंग्रेज अफसर की हत्या कर देने वाले ट्राइबल व्यक्ति मातमुर के जीवन को आधार बनाकर रोचक ढंग से लिखा गया है। इसी प्रकार येशे दोरजी थोंग्छी द्वारा लिखित 'शव काटने वाला आदमी', 'मौन होंठ मुखर हृदय', 'सोनाम' आदि भी उपन्यास क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश की मोनपा जनजाति के परिवेश एवं प्रथाओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती हैं। इसे पढ़ने के बाद मन जिज्ञासा से भर जाता है और ऐसा लगता है जैसे ये सभी घटनाएँ आँखों के सामने घटित हो रही हों।

ऐसी कई सारी रचनाएँ, अरुणाचल प्रदेश के समाज, संस्कृति, परिवेश, पूर्वज आदि को केंद्र में रखकर लिखी गई हैं- जैसे जोराम यालाम नाबाम लिखित 'जंगली फूल' (उपन्यास), 'तानी कथाएँ' (आदिवासी जीवन-

दर्शन पर आधारित), 'गाय गेका की औरतें' (संस्मरण), 'साक्षी है पीपल' (कहानी संग्रह)। इन रचनाओं के माध्यम से उन्होंने अपने पूर्वज आबोतानी, तानी दर्शन, न्यीशी समुदाय के सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन तथा उनके सामूहिक विश्वासों, धार्मिक- आध्यात्मिक मान्यताओं, रस्म-रिवाजों, त्योहार एवं अन्य आर्थिक क्रिया-कलापों इत्यादि का सूक्ष्मता से वर्णन किया है। इसी क्रम में जमुना बीनी ने अपने 'अयाचित अतिथि तथा अन्य कहानियाँ' (कहानी संग्रह), 'ऊई मोक' (लोक कथा संग्रह), 'समकाल की आवाज'(काव्य संग्रह), 'जब आदिवासी गाता है' (काव्य संग्रह) पुस्तकों से अरुणाचली साहित्य जगत को समृद्ध किया है और उनका यह बहुमूल्य योगदान उल्लेखनीय है। नाटक विधा में ताई तुगुङ लिखित और हाल ही में विश्व रंग महोत्सव, ईटानगर में मंचित 'लप्या' नाटक सर्वप्रथम प्रयास है। यह न्यीशी समाज की एक मासूम लड़की को किसी अपाहिज लड़के से जबरदस्ती विवाह करा देने की दर्दनाक कथा है। तारो सिंदिक के 'अक्षरों की विनती' और 'फिर आना तुम' (काव्य संग्रह), रेमोन लॉंगकु द्वारा लिखित 'कोंग्कोंग-फांग्फांग' (कहानी संग्रह), 'भेड़िए और पटकाई की औरतें' (काव्य संग्रह), दोरजी लोन्पु के 'मोनयुल के पेङदाङ में खिले फूल' (काव्य संग्रह) आदि का अप्रतिम योगदान देख सकते हैं।

अरुणाचल प्रदेश और यहाँ की जनजातियों पर आज कई सारी पुस्तकें-ग्रंथ उपलब्ध हैं तथा आज भी लिखने का प्रयास जारी है। इतना ही नहीं, अरुणाचल प्रदेश अपने लोक साहित्य में सर्वथा धनी है। इस प्रदेश में छब्बीस प्रमुख जनजाति एवं सौ से भी अधिक उप-जनजातियों का निवास है। यहाँ की विभिन्न जनजातियों के अपने खुद के समृद्ध लोक साहित्य उपलब्ध हैं। इस राज्य की अधिकतर जनजातियों के अपने खुद की लिपि न होने के कारण आज भी बहुत कुछ मौखिक रूप में ही उपलब्ध है। इसी कारण लुप्त होने का खतरा बढ़ गया है। इसे संग्रहीत कर लिप्यंतरण करने की कोशिश लोगों में बढ़ गई है। इसके चलते आज विभिन्न जनजातियों पर कई महत्त्वपूर्ण शोध हो चुके हैं और आज भी हो रहे हैं। इस संदर्भ में डॉ. ओकेन लेगो की 'आदी जनजाति : समाज और लोक-साहित्य' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक उल्लेखनीय है। प्रो. ओकेन ने अपनी पुस्तक में 50 पृष्ठ का लोक-गाथा सारांश 'आरदो-बादो आबांग' संकलित किया है, जो आदी जनजाति के मौखिक इतिहास, परंपरा, अनुष्ठान, रीति-रिवाज इत्यादि से साक्षात्कार कराता है। साथ ही इस तथ्य को बताता है कि लिपि के अभाव के बावजूद आदी जनजाति और इनकी उपजनजातियों ने अपनी लोकगाथा को आज भी अपनी स्मृति में संजोए रखा है। यह किताब आदी जनजाति के लोक-साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण बातों को सहज, किंतु शोधपरक ढंग से प्रस्तुत करती है। अरुणाचल प्रदेश में हिंदी की वर्तमान स्थिति को सही परिप्रेक्ष्य में समझने और उसे राजभाषा हिंदी के रूप में देखने का श्रमसाध्य प्रयास प्रो. श्याम शंकर सिंह ने किया है। अरुणाचल प्रदेश में लिपि की सर्वमान्य एकरूपता नहीं होने के कारणों के पीछे के तथ्यों को प्रो. सिंह ने उद्घाटित किया है तथा इस प्रदेश में हिंदी की स्वैच्छिक स्वीकृति के साथ पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन संबंधी पक्षों पर भी विस्तारपूर्वक विचार किया है, जो रोचक एवं पठनीय है। नंद किशोर पाण्डेय और हरीश कुमार शर्मा की प्रकाशित पुस्तक 'अरुणाचल प्रदेश की लोक-गाथाएं' अरुणाचल प्रदेश की विभिन्न जनजातियों के लोक-साहित्य की लोककथाओं से परिचित कराती हैं, जिनको पढ़ना प्रीतिकर है। धर्मराज सिंह की एक और पुस्तक 'अरुणाचल प्रदेश के त्योहार' इस प्रदेश की उत्सवधर्मिता को समझ सकने का मार्ग देती है। सांवरमल सांगानेरिया की यात्रा पुस्तक 'अरुणोदय की धरती पर' भी एक रोचक वृत्तांत है जिसे लेखक ने घुमक्कड़ी अंदाज में पाठकों के समक्ष

रखा है। इसी क्रम में वीरेन्द्र परमार की 'अरुणाचल के आदिवासी और लोक-साहित्य' पुस्तक पठनीय है। तागिन लोक साहित्य का हिंदी में सर्वप्रथम शोध कार्य करने का श्रेय डॉ. तारो सिंदिक को जाता है। उन्होंने 'तागिन लोक साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया है। इसके अंतर्गत उन्होंने तागिन जनजाति का सामान्य परिचय देते हुए तागिन शब्द का अर्थ, तागिन लोक साहित्य का स्वरूप विश्लेषण किया है। हिंदी में आदी लोक साहित्य पर केंद्रित कई शोध कार्य हो चुके हैं। जेबीना तकी ने 'आदी लोक साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य पूर्ण किया है। इसके अंतर्गत शोधार्थी ने आदी जनजाति का सामान्य परिचय देते हुए आदी लोक साहित्य को सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से विश्लेषित करने का प्रयास किया है। इङ परमे की 'आदी लोक साहित्य में सामाजिक सांस्कृतिक चेतना', तुनुङ ताबीङ की 'अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति की उपजनजाति ताङाम का समाज भाषिक अध्ययन' आदि जो केवल आदी समाज की संस्कृति, जीवन-शैली ही नहीं बल्कि यहाँ की अंदरूनी समाज की विशेषताओं और उनकी भाषा-शैली आदि से भी अवगत कराती हैं। हिंदी में अपातानी लोक साहित्य में सबसे पहला शोध कार्य डॉ. ओरोती ताबी का है। इनके शोध कार्य का विषय है-'अरुणाचल प्रदेश की अपातानी जनजाति के लोक साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन' जिसमें शोधार्थी ने अपातानी लोक साहित्य में उपलब्ध समाज, संस्कृति, लोक विश्वास, मान्यताएँ एवं शिल्पपक्ष आदि का वर्णन किया है। दोगे ङमदिर का 'अरुणाचल प्रदेश की गालो जनजाति के लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन' शोध-प्रबंध गालो समुदाय के लोक-गीत की दृष्टि से सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य और महत्त्व पर मौलिक ढंग से ठोस बात करती है। यह गालो समाज के अनुष्ठानों, लोक विश्वासों, मृत्यु संस्कार, प्राकृतिक संबंध आदि विषयों पर दृष्टि डालती है जिससे गालो समाज का पूरा सांस्कृतिक ताना-बाना बड़ी सौम्यता से लोगों के सामने प्रस्तुत हो जाता है। मेमा चिरी का 'न्यीशी लोक सुभाषितों का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन', अरुणा गोगोई का 'अरुणाचल प्रदेश की गालो जनजाति के लोक सुभाषितों का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन' आदि शोध-प्रबंध अरुणाचली लोक साहित्य की विशिष्टताओं को पूरी प्रतिष्ठा के साथ सामने रख देते हैं।

आज जब समाज आधुनिक प्रवृत्तियों का शिकार बन रहा है और बिना सोचे-समझे कई सारी नकारात्मक प्रवृत्तियों को अपनाता जा रहा है, ऐसे में किसी के पास इतना वक्त नहीं है कि वे अपने विचारों को, सामाजिक पहचान और सांस्कृतिक परंपरा को यथार्थ मुहावरे और जीवंत भाषा में जिंदा रख सके। लोग तो आज जितना हो सके सरल तरीकों से परिचित होना चाहते हैं। इस प्रकार के शोध कार्य से ही किसी भी समाज के वाक्-चातुरी, वाग्मिता, मौखिक इतिहास का पता चलता है और इसमें निहित उनकी सामाजिक व्यवस्था, सांस्कृतिक संरचना, जीवन-शैली, लोक विश्वास, हाव-भाव आदि का वास्तविक परिचय मिलता है। इधर हुए कुछ अन्य शोध कार्यों में तेली मेचा के 'आजिलामु स्वांग एवं यक्षगान का तुलनात्मक अध्ययन' शोध कार्य का अरुणाचली लोक साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। शोधार्थी ने यह बताया है कि मोनपा और शेरदुकपेन समुदाय के अतिरिक्त लगभग सभी जनजातियों के पास लोक नाट्य का अभाव है। आजिलामु नाटक मोनपा समुदाय में खेला जाने वाला एक लोक नाट्य है तो स्वांग और यक्षगान उत्तर भारत और कर्नाटक में खेले जाने वाले लोक नाट्य हैं। यह कितनी अच्छी बात है कि आज भी यह सुरक्षित है और लोगों के बीच आज भी खुले में खेला जाता है। आजिलमु नाटक को मंचन के लिए कोई व्यवस्थित मंच की आवश्यकता नहीं है बल्कि यह

किसी भी खुले मैदान में खेला जा सकता है। आजिलमु लोक नाट्य का स्वांग और यक्षगान लोक नाट्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन यहाँ से भिन्न समाज की संस्कृति, जीवन-शैली, लोक विश्वासों आदि में उपलब्ध समानता एवं असमानता के अध्ययन द्वारा अरुणाचल से भिन्न समाजों को जोड़ने का एक बौद्धिक प्रयास हुआ है। तुम्बम रिबा लिखित 'अरुणाचल प्रदेश के गालो लोक साहित्य में स्त्री जीवन के विविध आयाम' शोध-प्रबंध गालो समाज में स्त्रियों की भूमिकाओं को गालो लोक कथाओं, लोक गीतों एवं लोक सुभाषितों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। शोधार्थी ने गालो लोक साहित्य एवं समाज में स्त्रियों का अंतर प्रस्तुत किया है, साथ ही स्त्री के लौकिक-अलौकिक रूप को भी प्रस्तुत किया है। मुको देले का 'अरुणाचल प्रदेश की इदु मिशमी जनजाति की लोककथाएँ' शोध-प्रबंध इदु समाज एवं संस्कृति को इदु लोक कथाओं में ढूँढ़ने का प्रयास है। इतना ही नहीं यह शोध-प्रबंध इदु मिश्मी लोक कथाओं की वर्तमान उपादेयता पर भी चर्चा करती है। बनासिरी पर्टिन के शोध-प्रबंध को भी इसी क्रम में देखा जा सकता है। उनका 'समाज सांस्कृतिक दृष्टि से अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति के लोकगीतों का भोजपुरी के लोकगीतों के साथ तुलनात्मक अध्ययन' शोध-प्रबंध दो भिन्न समाज को जोड़ने का महती प्रयास है। यह लोकगीतों के माध्यम से इनमें निहित पारिवारिक संबंध, पर्व-त्योहार, पूजा-उपासना, विवाह-मृत्यु प्रथा, सामाजिक, आर्थिक धार्मिक संरचनाओं आदि को खोजने का महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

अरुणाचल प्रदेश के लोक साहित्य यात्रा में राजीव गांधी विश्वविद्यालय के पीजीडीएफएच के विद्यार्थियों ने भी डॉ. राजीव रंजन प्रसाद के निर्देशन में 40 के करीब लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है। ताना मेरी ने 'अरुणाचली तानी समुदाय (न्यिशी, आदी, गालों, अपातानी, तागीन) के वस्त्र-परिधान शैली एवं सांस्कृतिक वेश-भूषा' विषय पर अपना लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। इन पाँचों समुदायो की वस्त्र परिधान शैली लगभग एक जैसी है किंतु इनमें बनी डिजाइन, रंगों का चुनाव, सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता आदि एक-दूसरे से भिन्न है। किसी के सांस्कृतिक पोशाक में सूरज का बिंब होता है तो किसी में आँख जैसी कोई आकृति बनी होती है। इस समुदाय की अधिसंख्य स्त्रियाँ 'गाले' पहनती हैं। ये स्वयं को आबोतानी का वंशज मानती हैं। इसी तरह सुजीत कुमार सिंह ने 'शेरदुकपेन जनजाति के त्योहारों पर आधुनिकता का प्रभाव: एक विश्लेषण' विषय में अरुणाचल प्रदेश के वेस्ट कमेङ जिले में निवास करने वाले एक जनजाति के त्योहारों पर अपना लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है। शेरदुकपेन समुदाय में तीन प्रकार के त्योहारों को बड़े धूमधाम से मनाते हैं। 'लोसर' इनका मुख्य त्योहार है जो नए साल के आगमन पर मनाते हैं तो 'वाङ' अपने भगवान बुद्ध के सम्मान में मनाते हैं। प्रकृतिपूजक होने के नाते वे अपने त्योहार को प्रकृति से जोड़कर देखते हैं। वे विश्वास करते हैं कि संसार में उपलब्ध पानी, वन, हवा आदि सभी के दाता होते हैं और इन्हीं दाताओं को खुश करने के लिए वे 'खिकसबा' त्योहार को मनाते हैं। सुजीत ने अपने शोध कार्य से इन त्योहारों पर पड़ रहे आधुनिकता के प्रभाव पर प्रकाश डाला है। पीजीडीएफएच के ही विद्यार्थी रहे चाचू दाई ने 'तागिन जनजाति: परंपरा, मिथक एवं आधुनिकता' विषय पर अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपने लघु शोध प्रबंध के माध्यम से तागिन जनजाति की लोक परंपरा, विश्वासों, अनुष्ठानों एवं समाज में विद्यमान आधुनिकता के प्रभाव को सम्यक ढंग से प्रस्तुत किया है। निय्मन्या हेन्खे ने 'नोक्ते जनजाति की बोरदूरिया बस्ती का लोक-जीवन एवं लोक-संस्कृति: एक अध्ययन' विषय के माध्यम से अरुणाचल प्रदेश के तिराप जिले में स्थित बोरदूरिया गाँव में निवास करने वाली नोक्ते

जनजाति की जीवन शैली एवं लोक संस्कृति के बारे में चर्चा विस्तार से की है। लाम छोटन ने 'तवांग जिले की बघर बस्ती का लोक-साहित्य एवं लोक-संस्कृति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय के माध्यम से तवांग जिले में स्थित बघर बस्ती में निहित लोक साहित्य का अध्ययन किया है। इसके माध्यम से लोक-परंपरा, विश्वासों, अनुष्ठानों को प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है। पीजीडीएफएच के विद्यार्थियों द्वारा अरुणाचल प्रदेश के जनसंचार माध्यमों के प्रमुख केंद्र आकाशवाणी, ईटानगर और दूरदर्शन, ईटानगर पर भी लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया गया है जो अरुणाचल प्रदेश में मीडिया की मौजूदगी और उसके कार्यकलापों को प्रकाश में लाते हैं। इसी तरह जवाहर लाल नेहरू संग्रहालय, ईटानगर और अरुणाचल प्रदेश के सिनेमा जगत को केंद्र में रखते हुए भी पीजीडीएफएच विद्यार्थियों द्वारा लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया गया है।

अरुणाचल प्रदेश में लोक साहित्य का अभाव नहीं है, साथ ही हाल में हिंदी में प्रकाशन का एक बड़ा कार्य केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने किया है। इस कार्य को दिशा देने में संस्थान के निदेशक और वर्तमान में राजस्थान विश्वविद्यालय में प्राध्यापक प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय जी का प्रयास अत्यंत उल्लेखनीय है, जिन्होंने अरुणाचल प्रदेश की विभिन्न जनजातियों पर लोक-साहित्य और अध्येता-कोश प्रकाशित करने का महती कार्य किया है। यह अवश्य है कि इस प्रदेश के लोगों ने लिपि के अभाव में लिखित लोक-साहित्य की विधिवत परंपरा नहीं रही है, लेकिन यह भी सत्य है कि प्राचीन काल से अपने लोक साहित्य को मौखिक रूप में हस्तांतरित करने का प्रयास मजबूती से हुआ है। वे अपने हाव-भाव, विचारों, अनुभवों आदि को कभी कथा, तो कभी गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त और अभिव्यंजित करते आए हैं। लिपि के अभाव में लोगों ने इसे मौखिक रूप में जिंदा रखने का वैकल्पिक प्रयास प्रमुखता से किया है। किंतु आज इस राज्य में कुछ जनजातियों के पास अपनी खुद की लिपि विकसित की जा चुकी हैं- जैसे मोनपा, वानचो, तंग्सा, तानी आदि। आज यहाँ के लोक साहित्य बड़ी संपदा में मौजूद है। इसका कारण है, यहाँ के लोगों में अपनी संस्कृति और परंपरा से अत्यंत प्रेम और घना जुड़ाव होना। इन सबके पीछे अरुणाचल प्रदेश के लोक साहित्य एवं अनुसंधान की विकास यात्रा का योगदान अप्रतिम है, जिसे यहाँ और बाहर के लेखकों एवं विद्वानों ने बड़ी ऊंचाई प्रदान की है। आज अरुणाचल प्रदेश के संदर्भ में अनगिनत लोक साहित्य और शोध-कार्य पुस्तकाकार उपलब्ध हैं या अप्रकाशित शोध-प्रबंध के रूप में सुरक्षित हैं। यह प्रयास अरुणाचल प्रदेश की विविधता में एकता की प्रकृति को रूपायित करता है जिस कारण इस प्रदेश को 'लघु भारत' की संज्ञा दी जाती है। यहाँ इनमें से कुछेक की चर्चा हो पाई है, ताकि इस प्रदेश की मनोरम भूमि की झलक पाठकगण को मिल सके।

*(**लेखकीय परिचय :** संतिमो निमासो राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं।*
मोबा: 6909446223, ई-मेल : santimonimasow915@gmail.com)